F-11
D.El.Ed.-1st-year

कला में शिक्षा (EDUCATION IN ART)

यूरोप में 18 वीं शताब्दी में सौन्दर्य शास्त्रियों ने कलात्मक कार्यों को तीन वर्गों में विभाजित किया –

(I) सौन्दर्यात्मक लक्ष्य से सम्बन्धित कार्य – ललित कला

(II) नैतिक कार्य – आचरण कला।

(III) उपयोगी कार्य – उद्योग कला।

उपर्युक्त वर्गीकरण से स्पष्ट होती है कि कलाओं से मानव कल्याणकारी शिक्षा की प्राप्ति होती है। कला सत्य, शिवं और सुन्दरम् की व्यावहारिक रूप प्रस्तुत कर व्यक्ति को कर्तव्य पथ पर अग्रसर करता है। कला रस प्रधान होती है रस दशा व्यक्ति को वैयक्तिक स्वार्थों से उपर उठाकर सामाजिक हितों की ओर ले जाती है आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा है – हृदय की मुक्तावस्था रस-दशा कहलाती है। इस रस-दशा में आने की पश्चात् ही मनुष्य अपनी पृथक् सत्ता को भूलकर अपने हृदय को स्वार्थ-सम्बन्धों के संकुचित मण्डल से उपर उठाकर लोक-सामान्य भावभूमि पर ले जाता है। इस भूमि पर पहुँचे हुए मनुष्य को कुछ काल तक अपनी सत्ता को लोक-सत्ता में लीन कर देना होता है। इस प्रकार कला मनुष्यत्व की शिक्षा देती है जन-कल्याण की शिक्षा से प्राप्त होती है। कला भावनाओं का परिष्कार कर उन्हे उदात्त बनाती है, और भावनाओं का उदात्तीकरण जन-कल्याण की सृष्टि करता है। मार्क्स भावनाओं के उदात्तीकरण के निमित ही कला के अस्तित्व को स्वीकार करता है।

कला के अन्दर शिक्षा के निम्न प्रयोजन सन्निहित हैं –

(I) कला शिक्षा
(II) जीवन की शिक्षा
(III) सेवा – शिक्षा
(IV) अनुभूतियों की शिक्षा
(V) आनन्द की शिक्षा
(VI) मनोरंजन की शिक्षा
(VII) सृजनात्मकता की शिक्षा

Scanned with CamScanner